आपदा के बाद अलग-थलग हैं सीमांत गांव

खाने-पीने की चीजें नहीं हो रही मुहैया

अमर उजाला ब्यूरो

- स्याबा गांव में बादल फटने से संपर्क मार्ग और पुल हुए थे ध्वस्त
- गांव के ऊपरी हिस्से में हो रहा भूस्खलन

उत्तरकाशी। आपदा से सिर्फ तीर्थयात्रा वाले मार्गों पर ही तबाही नहीं बल्कि सीमांत जनपद के विभिन्न गांवों भी इससे बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। सरकारी मशीनरी का पूरा ध्यान तीर्थयात्रियों को निकालने पर ही लगा है। ऐसे में समय के साथ अलग-थलग पड़े गांवों के बाशिंदों की स्थिति खराब होने लगी है। गांव में खाने-पीने की चीजें भी मुहैया नहीं हो पा रही हैं। वर्ष 2010 से आपदाओं से जूझ रहे गांवों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है।

भटवाड़ी प्रखंड के स्याबा गांव में 16 जून को लोदरीनामे तोक में बादल फटने से कई मवेशी मलबे में समा गए। गांव का एक मात्र संपर्क मार्ग तथा गंगोत्री राजमार्ग से जोड़ने वाला नौलुणा विशनपुर का झूला पुल ध्वस्त हो चुका है। गांव के उपप्रधान भागवत सिंह राणा ने बताया कि गांव के ऊपरी हिस्से में भूस्खलन हो रहा है। ग्रामीण सुरक्षित स्थान वाले घर-छानियों में दुबके हुए हैं। बीमारों और गर्भवती महिलाओं की स्थिति बेहद खराब है। मुसड़गांव धनारी के प्रधान कीर्तिदत्त नौटियाल ने बताया कि

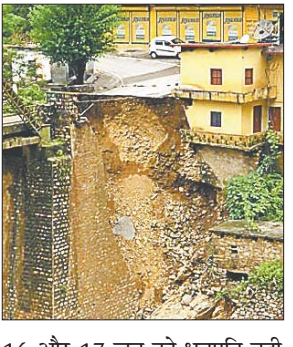

16 और 17 जून को धनपति नदी की बाढ़ में गांव को जोड़ने वाले सभी संपर्क मार्ग और पुलिया बह गई हैं। बाड़ाहाट के जिला पंचायत सदस्य कमल सिंह रावत ने बताया कि असी गंगा घाटी के अगोड़ा, ढासड़ा, दंदालका, सेकू, नौगांव, गजोली, भंकोली के गांव अलग-थलग पड़े हैं। अभी तक शासन-प्रशासन का कोई नुमाइंदा इन गांवों की सुध लेने वाला नहीं पहुंचा है।